Conservation of Resources;

Water and Forest Resource Conservation

Conservation of Resources

- सूरक्षित करके रखना संरक्षण है।
- संसाधनों को सावधानीपूर्वक किया जाने वाला प्रबन्ध तथा रखरखाव कि क्रिया जिससे उसका दुरूपयोग अथवा अनावश्यक क्षति को रोका जा सके, संसाधन संरक्षण कहलाता है।

Conservation of Resources

- "संरक्षण से तात्पर्य वर्तमान पीढ़ी **(Generation)** का भविष्य की पीढ़ी हेतु त्याग है।"–ऐली **(Ely)**
- एक अमेरिकन समिति के अनुसार संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग बंद करना नहीं अपितु उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा वर्तमान संसाधनों का अधिकाधिक समय तक उपयोग किया जा सके।

संसाधन संरक्षण की आवश्यकता

- जनसंख्या विस्फोट,
- प्राविधिक–औद्योगिक क्रांति,
- अत्यंत भौतिकवादी जीवन–दर्शन **(Materialistic)** एवं जीवन स्तर **(Standard of living)**

संसाधन संरक्षण के नियम

- किसी भी देश या प्रदेश के कुल संसाधनों की मात्रा एवं गुणवत्ता का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।
- जो संसाधन सीमित मात्रा में हैं या समाप्य (Exhaustible) हैं, उनका वैज्ञानिक ढंग से केवल अनिवार्य कार्यों में ही उपयोग करना चाहिए।
- ऐसी तकनीकी का विकास करना चाहिए जिससे सीमित संसाधनों का विकल्प मिल सके।
- विकल्प उपलब्ध होने पर जो संसाधन हमारे पास अधिक है अथवा नव्यकरणीय है उसका उपयोग किया जाना चाहिए।

सतत् पोषणीय विकास
(Sustainable Development)

- वर्तमान में संसाधन संरक्षण की एक नवीन संकल्पना ने जन्म लिया है जिसे हम सतत् विकास या सतत् पोषणीय विकास कहते हैं।

- अर्थात् हम इस प्रकार का विकास करे जिससे हमारी पारिस्थितिकी या प्रकृति को किसी भी प्रकार का नुकसान ना पहुंचे।

जल संसाधन संरक्षण

- जल एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी संसाधन है।
- जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण, कृषि में वृद्धि आदि के कारण जल की मांग लगातार बढ़ रही है।
- यद्यपि पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग पर जल विद्यमान है लेकिन उसका केवल 2.5 प्रतिशत जल ही स्वच्छ है और उसका भी लगभग 2 प्रतिशत भाग ध्रुवों एवं उंचे पर्वतीय भागों में बर्फ के रूप में जमा हुआ है।
- अतः लगभग 0.5 प्रतिशत जल से ही समस्त वनस्पति, जीव–जगत, कृषि आदि सभी कार्य करने होते हैं। इसलिए पृथ्वी पर स्वच्छ जल की उपलब्धता अत्यंत कम है।

जल संसाधन संरक्षण

- विश्व में प्रति व्यक्ति जल का औसत उपभोग ग्रामीण क्षेत्रों में 50 लीटर एवं नगरों में 150 लीटर प्रतिदिन है।
- विश्व की जनसंख्या इसी तरह तीव्र गति से बढ़ती रही तो 21वीं सदी के अन्त में जल एक अति मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन के रूप में हो जाएगा।
- वर्तमान में विश्व के लगभग 80 देश एवं आधी जनसंख्या जल संकट का सामना कर रही है। इसीलिए कहा भी जाता है कि "तीसरा विश्व युद्ध जल के लिए ही लड़ा जाएगा।" इसलिए वर्तमान में जल संरक्षण करना अति आवश्यक है।
- जल संसाधन संरक्षण की प्रमुख विधियां निम्नलिखित हैं–

जल संसाधन संरक्षण

- **जल संसाधन संरक्षण की प्रमुख विधियां निम्नलिखित हैं–**
- जल की प्रदूषण से सुरक्षा **(Prevention of water pollution)**
- जल का पुनर्वितरण **(Redistribution of water)**
- भूमिगत जल का विवेकपूर्ण उपयोग **(Rational use of ground water)**
- जनंसख्या नियंत्रण **(Population control)**
- सिंचाई की उन्नत विधियों का प्रयोग **(Use of advanced methods in irrigation)**
- वनावरण में वृद्धि **(Afforestation)**
- बाढ़ प्रबन्धन **(Flood management)**
- शहरी अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग **(Reuse of urban waste water)**

वन संसाधन संरक्षण

- वनस्पति का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि किसी क्षेत्र विशेष के लिए वनस्पति को वहां का 'हरा सोना' कहा जाता है।
- किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले पेड़–पौधों, झाड़ियों (Scrub) एवं घासों को सम्मिलित रूप से वनस्पति कहा जाता है, जबकि पेड़–पौधों एवं झाड़ियों से ढ़के विस्तृत भू–भाग को वन क्षेत्र कहा जाता है।
- बढ़ती जनसंख्या एवं विकास, कृषि विकास, अनियंत्रित पशुचारण, निर्माण कार्य, घरेलु एवं व्यापारिक कार्यों के लिए वन विनाश, खनन, वनाग्नि आदि के कारण विश्व में वन क्षेत्र तेजी से घट (वर्तमान में लगभग 31 प्रतिशत) रहा हैं।

वन संसाधन संरक्षण

- वन संरक्षण की प्रमुख विधियां निम्नलिखित हैं–
- वनों की अंधाधुंध कटाई पर नियंत्रण।
- वनाग्नि से सुरक्षा।
- अधिकाधिक वृक्षारोपण।
- पुनःवनीकरण विधि का विकास।
- आवश्यक कार्यों के लिए वनों की कटाई वैज्ञानिक विधियों से।
- जनसंख्या वृद्धि पर रोक।
- ईंधन के लिए वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग।
- जलवायु दशाओं के अनुसार वृक्षारोपण।
- वनों से होने वाले प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष लाभों के लिए जन–जागरूकता बढ़ाना।